दिनांक 26 मार्च, 1985

सं. ग्रो. वि./रोहनक/28-85/12380.—चृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. सोमानी पिलिंकगटन लि०, कसार रोहतक, के श्रमिक श्री जगजीत सिंह तथा उसके प्रवत्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीकोगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव. ग्रीहोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्राक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारो ग्रिधिसूचना सं० 3564-ए-एस. ग्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री जंगजीत सिंह की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि./फरीदाबाद/43-85/12394-—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. स्ट्रिलिंग टूल्ज ग्रा॰लि॰5-ए डी. एल. एफ., एरिया फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री राम पाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद र लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, मौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 54:5-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम 88 श्रम/57/11245, दिनांक 7 परवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की खारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री राम पाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 28 मार्च, 1985

सं०भ्रो॰वि॰/फरीदाबाद/97-84/12953.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ एलसन काटन मिल्ज लि॰ 23 माईल स्टोन, मथुर रोड, बल्नबगढ़, (फरीदाबाद) के श्रमिक श्री हरून नया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है :

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद मिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीम गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत मा उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निविद्य करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या भी हरून की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि गहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?